# अध्याय - चार

## आल्हा - ऊदल

ई भोजपुरी इलाका के लोकप्रिय लोकगाथा ह। आल्हा-ऊदल के नाँव सुनते बूढ़-जवान सभके भुजा फड़के लागेला। भोजपुरिया लोग वीर होला। इहे वजह बा कि गैर-भोजपुरी इलाका के ई कथा एजवा के लोग के खूब धरलस आ सभे एकरा के आपन कंठहार बना लेलस। वीरे आदमी प्रेम करेला आ जरूरत पड़ला पर ओकरा खातिर आपन बलिदान देला। आल्हा-ऊदल के गाथा भी अइसने वीर के कथा ह।

आल्हा-ऊदल राजा परमाल के सेना में रहस बाकिर अपना वीरतापूर्ण करनामा का चलते लोगन का नजर में राजा से अधिका सम्मान पवले।

### विषय प्रवेश

एह पाठ में संकलित अंश आल्हा-ऊदल लोकगाथा के आल्हा खंड से लिहल गइल बा, जवना में आल्हा के बिआह के पहले के तइयारी आ नैनागढ़ में ओह खातिर भइल लड़ाई के चरचा बा। शुरू के अंश में आल्हा के कचहरी आ आल्हा-ऊदल के संवाद बा। बाद वाला अंश नैनागढ़ के लड़ाई के तइयारी आ लड़ाई से संबंधित बा।

# आल्हा के बियाह

रामा लागल कचहरी जब आल्हा के बंगला बड़ बड़ बबुआन
लागल कचहरी उज्जैन के दरबार
सात मन का कुंडी दस मन का घुरना लाग
ओहि समन्तर ऊदल पहुंचल बँगला में पहुंचल जाए
देखि के सूरत ऊदल के आल्हा मन में करे गुमान
देहियाँ देखो तोर धूमिल मुंहवा देखो उदास
कौन सकेला तोर पड़ गइल बाबू कौन अइसन गाढ़
भेद बतावा तू जियरा के कइसे बूझे प्रान हमार

अरे त हाथ जोड़ के ऊदल बोलल भइया सुन धरम के बात
पड़ि सकेला है देहन पर बड़का भाइ बात बनाव
पूरब मरलों पुर पाटन में जे दिन सात खंड नैपाल
पच्छिम मरलों बदम लहोर दक्खिन बिरिन पहाड़
चारि मुलकवा खोजी अइलीं कतहीं न जोड़ी मिले कुंआर
कनिया जामल नैनागढ़ में राजा इन्दरमल के दरबार
बेटी रूप सयानी समदेवा के वर माँगल बाँध जुआर
बड़ लालसा हवे जियरा में जो भइया करौ बियाह सोनवा से
लागल लड़ाई नैनागढ़ में घोड़ा चला हमारे साथ

एतना बोली घोड़ा सुन गइल घोड़ा जरि के भइल अंगार
बोलल घोड़ा डेबा से बाबू डेबा के बलि जाओ
कज्जर पड़ि गइल आल्हा पर ओपर गिरे गजब के धार
जब से अइलों इंद्रासन से तब से बिपत भइल हमार
पिल्लू बिआइल बा खूरन में दालन में झाला लाग
मुरचा लागि गइल तरवारन में जग में डूब गइल तलवार
आल्हा लड़इया कबहो न देखल जग में जीवन है दिनचार
अतना बोली डेबा सुन गइल डेबा खुशी मगन होइ जाय
खोले अगाड़ी खोले पिछाड़ी खोले सोनन के लगाम
पीठ ठोक के जब घोड़ा के घोड़ा सदा रहौ कलियान
चलल जे राजा ब्रहमन भुडबेनुल चलल बनाय
घड़ी अढ़ाई आ अंतर में ऊदल कन पहुँचल जाय
देखिके सुरतिया बेंदुल के रूदल हसके कहल जवाब
हाथ जोड़ के रूदल बोलल घोड़ा सुनले बात हमार

भूजे डंड पर तिलक बिराजे परतापी ऊदल बीर
फाँद बछेड़ा पर चढ़ गइल घोड़ा पर भइल असवार
घोड़ा बेनुलिया पर बावे ऊदल घोड़ा हंसा पर डेबा वीर
दुइए घोड़ा दुइए राजा नैनागढ़ चलल बनाय
मारल चाबुक है घोड़ा के घोड़ा [illegible] डारे पाँव
उड़ि गइल घोड़ा सरग चलि गइल घोड़ा चला बराबर जाय
रिमझिम रिमझिम घोड़ा नाचे जैसे नाचे जंगल मोर
रात दिन का [illegible] में नैनागढ़ [illegible] तफाय
देखि फुलवारी सोनवाँ के रूदल बड़ मॉगन होय जाय
(सत्यव्रत सिन्हा के 'भोजपुरी लोक गाथा' पुस्तक से साभार)

# अभ्यास

## वस्तुनिष्ठ

1. अल्हा-रूदल के लड़ाई कहाँ भइल रहे ?
2. रूदल के घोड़ा के नाँव का रहे ?
3. केकरा फुलवारी देख के रूदल मगन हो गइल रहले ?
4. घोड़ा जरि के अंगार काहे भइल रहे ?
5. मुरचा कहँवा लागल रहे ?
6. कविता के देल गइल अंश कवना तरह के कविता बा ?

   (क) हास्य-रस (ख) शृंगार- रस (ग) वैचारिक (घ) वीर-रस
7. सोनवाँ केकर बेटी रहे ?
8. राजा इनरमन कहाँ के राजा रहले ?
9. घोड़ प चढ़ के रूदल कहँवा गइल रहे ?

   (क) रामगढ़ (ख) छत्तीसगढ़ (ग) नैनागढ़ (घ) आजमगढ़
10. कचहरी केकरा दरबार में लागल रहे ?

## लघु उत्तरीय

1. अल्हा-रूदल के बीच में कवन संबंध रहे ?
2. घोड़ा केकरा से बलि खातिर कहलस ?
3. सोनवाँ से केकर बिआह होखे के रहे ?
4. रूदल अल्हा से कवना बात खातिर विनती कइले रहे ?
5. अल्हा केकर सूरत देख के गुमान करत रहले ?

## दीर्घ उत्तरीय

1. दिहल गइल कविता के अंश के भाव अपना भाषा में लिखीं।

## परियोजना कार्य

1. अल्हा-रूदल के कथा केहू से पूछ के लिखीं।
2. कवनो वीर-रस के कविता अपना कॉपी में लिख के कक्षा में साथियन के साथे पाठ करीं।

## शब्द भंडार

| | | |
|---|---|---|
| अंगार | - | धधकत आग के टुकड़ा |
| विपत | - | भारी दुख |
| वज्जर | - | बज्र |
| खूर | - | पशु के पैर के अगिला भाग, नाखून |
| मगन | - | मस्त |
| अगाड़ी | - | आगे |
| पिछाड़ी | - | पाछे |
| बिराजे | - | बइठे |
| असवार | - | सवारी करे वाला |
| सरग | - | स्वर्ग |

## पाठ से बहरी के सवाल

(1) रउआ अगल-बगल कँहू लोकगाथा गावे वाला होखे त ओकरा से कवनो लोकगाथा पर आधारित कविता सुन के लिखीं।

ABSOL SOLUTIONS PATNA